“किड़ी सीको लई सली,
वस मे मली गई दार”

# वातें
वाग्धारा नी

फरवरी, 2023

VAAGDHARA

अंक 33

**प्यारे किसान भाइयों- बहनों,**
**प्यारे बच्चो - जय गुरु !!**

आप सभी को वर्ष 2023 में आने वाले त्योहारों की शुभकामनाएं| प्रति माह पत्रिका के माध्यम से संवाद करने का अवसर मिलता है और विभिन्न विषयों पर चर्चा होती है| हर माह किसी एक विषय को लेकर गहराई से चिंतन होता है क्या? हम किस प्रकार से आने वाले माह में हमारे परिवार, बच्चों, गांव, टीले, फले एवं पर्यावरण की दृष्टि से, संस्कृति की दृष्टि से,खेती की दृष्टि से, आजीविका की दृष्टि से, सुरक्षित रख पाए और हम सब समय-समय पर प्रयास भी करते रहते है|

आगामी माह में होली का महत्वपूर्ण त्यौहार आने वाला है| मैं सभी साथियों एवं भाइयों- बहनों को शुभकामनाएं देना चाहता हूँ कि यह त्यौहार वर्ष पर्यंत हमारे लिए खुशियां व आनंद लेकर आए| होली के साथ ही शायद आने वाले 15 दिनों में हमारे खेतों की फसल कटाई शुरू होने वाली है |

मैं इस माह आप से यही आग्रह करना चाहूंगा कि :-

- गेहूं कि फसल विशेष रूप से कटाई करने की स्थिति में होगी| उस समय कई परिवार मजदूरी हेतु अपने बच्चो के साथ फसल कटाई के लिए दुसरे राज्य में पलायन करते है, जिससे बच्चो कि शिक्षा प्रभावित होती है |
- मेरा यह आग्रह है कि हम पलायन पर जाने से पहले विचार करे अपने बच्चो के भविष्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा से वंचित ना हो|
- होली का त्यौहार हम परम्परागत तौर -तरीकों से मनाये और आने वाली पीढ़ियों को भी इन तरीकों से अवगत करवाए|
- हमारी जीवन शैली का हिस्सा रहे हाट से ज्यादा से ज्यादा युवाओं को स्थानीय स्तर पर ही रोजगार के अवसर देखने होंगे|
- गेहूं कटाई के समय अगर किसी दूसरी किस्म का गेहूं अलग दिख रहा है तो उसको अलग से निकाल ले ताकि पहले से ही हमारा गेहूं एक प्रजाति का हो जाए| खलियान को बहुत अच्छे से साफ करे, जहां हम फसल रखने वाले हैं|
- हमारे फल आम, महुवा, कटहल एवं जो फुलों की फसल आने वाली है उसकी तैयारी करें|
- हमें फलों के भार से डालियों को टूटने से बचाने के लिए बाधने की आवश्यकता हो तो हम उसे बाँधकर सहारा दे, ताकि फलों को नुकसान होने से बचाया जा सके|

मैं इसके साथ ही आप लोगो को शुभकामनाएं देना चाहता हूं कि आप लोगों के पेड़ो पर इतने फल आए की पेड़ भरपुर रहे और जीवन आनंद से भर जाए| हमारी फसलों, फलों की उपलब्धता तभी सार्थक है| जब हम इसे हमारी पीढ़ियों, हमारे बच्चों को समय- समय पर खिलाते रहे, केवल मात्र व्यापार व बेचने के काम में नहीं ले तथा हमारे माता-पिता एवं हमारे घर के वृद्ध से पूछें की क्या-क्या उपयोग किए जाते हैं यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है|

मैं अंत में आप सभी को पुनः यह आग्रह करूंगा की गर्मी के समय में आप लोग मवेशियों को, अपने बच्चो का बदलते ऋतु में ध्यान रखे| मेरे साथियों को आने वाले समय हेतु बहुत-बहुत शुभकामनाएं एवं धन्यवाद!

धन्यवाद
जय गुरु

आपका अपना
जयेश जोशी

## आने वाली पीढ़ी के साथ जैविक खेती की तैयारी

**फरवरी माह** में जैसे- जैसे तापमान बढ़ता जाता है, फसलों में कई तरह के रोग व कीट लगने की संभावना भी बढ़ जाती है। साथ ही यह महीना कई तरह की सब्जियों कि बुवाई के लिए भी अनुकूल होता है ।

तापमान को ध्यान में रखते हुए किसान **कद्दूवर्गीय सब्जियों, मिर्च, टमाटर, बैंगन आदि की बुवाई पौधाशाला में कर सकते हैं** ।

**चने की फसल में फली छेदक रोग**

इस महीने मौसम में होने वाले बदलाव के कारण चने की फसल में फली छेदक कीट का प्रकोप भी बढ़ने की प्रबल संभावना होती है | चने की फसल को इन कीटों से बचाव के लिए फसल में 3-4 फेरोमॉन ट्रैप प्रति एकड़ उन खेतों में लगाया जाना जरुरी होता है, जहां पर पौधों में 40-45% फूल खिल गए हो, इसके अलावा खेत में “T” अक्षर आकार के पक्षी बसेरा खेत के विभिन्न स्थानों पर जरुर लगाना चाहिए | गेंहू, चावल, बाजरे इत्यादि आज गोदाम में भरे पड़े है | इस दशक में फसलों का उत्पादन तो बढ़ा लेकिन फसलों में नए-नए कीड़े व रोग भी आए। आज जमीन का स्वास्थ्य एवं उर्वरकता खराब हो रही है। खेतों में विकारों की मात्रा बढ़ रही है।भूमि की उर्वराशक्ति में कमी आ रही है।

मनुष्यों में विभिन्न प्रकार के कीटनाशकों से कैंसर, चर्म रोग जैसी भयानक बिमारी बहुत ज्यादा होने लगी है। साथ ही अनाज का स्वाद भी पहले जैसा नहीं रहा। यह सब बिना सोच-विचार किए एवं बिना अनुभव के रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशक रसायनों के अत्यादिक उपयोग करने के कारण हुआ। हम अपने देशी तरीकों को भूल रहे है।

वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुये गोबर की खाद, हरी खाद, कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट एवं नीम को किसानो भाईयों को फिर से याद करने की जरूरत है। देशी तौर तरीकों का वैज्ञानिक तरीकों से समन्वय करना है। यह जैविक खेती में ही संभव है। इससे भूमि के स्वास्थ्य, अनाज के स्वाद और मृदा उर्वरता की शक्ति कायम रखी जा सकती है, जिससे किसानो भाईयों को फसल उपज एवं जैविक कृषि उत्पादों की कीमत बाजार में अच्छी एवं ज्यादा मिल सके ।

### जैविक खेती की आवश्यकता क्यों है

- कृषि उत्पादन में टिकाऊपन लाने के लिए।
- मृदा में जैविक गुणवत्ता बढाने के लिए।
- प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए।
- वातावरण प्रदुषण को रोकने के लिए।
- मानव स्वास्थ्य की रक्षा हेतु।
- उत्पादन लागत को कम करने के लिए।

### ऐसे अपनाऐं जैविक खेती

जैविक खेती को समझने एवं फसल की उत्पादकता बनाए रखने के लिए इसे मुख्य रूप से दो घटको में बाँट सकते है। पहला, पौधों के लिए खुराक अर्थात् समन्वित पोषक तत्व प्रबंध तथा दूसरा, कीड़ों से रक्षा अर्थात् समेकित नाशीजीव प्रबंध करना। सफल जैविक खेती के लिए इन दोनों को विस्तार से जानना बहुत आवश्यक है।

पौधों को अपना जीवन चक्र पूरा करने के लिए 16 प्रकार के पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। इनमें कार्बन, हाइड्रोजन व आक्सीजन पौधों को पानी व हवा से मुक्त में मिल जाते है। जबकि जस्ता, मैगनीज, लौहा, तांबा, बोरोन, मोलिब्डेनम, एवं कैल्शियम (7 तत्व) की बहुत कम मात्रा में आवश्यकता होती है।

मिट्टी में कैल्शियम एवं मैग्निशियम की प्रायः कमी नहीं पाई जाती है। इन तत्वों का बहुत छोटा भाग दोनों में संग्रहित होता है। यदि फसल अवशेष, कम्पोस्ट, गोबर की खाद का नियमित उपयोग किया जाए तो पौधों के लिए इन तत्वों के साथ पोटाश की भी कमी नहीं रहती है, क्योंकि मनुष्य के लिए उपयोगी दोनों में पोटाश बहुत कम मात्रा में पाई जाती है।

पौधों के लिए शेष तीन महत्त्वपूर्ण पोषक तत्वों मे गंधक की पूर्ति जिप्सम का उपयोग करके की जा सकती है। इसी प्रकार प्रकृति में उपलब्ध राक फास्फेट खनिज एवं पी.सी.बी. व पी.एस.एम. खादों द्वारा फास्फोरस की व्यवस्था की जा सकती है। इसके लिए राक फास्फेट को खेत में डालें। बीज को बोने से पहले पी.एस.बी./पी.एस.एम. जीवाणु खाद से उपचारित करें।

सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व नत्रजन की पौधों के लिए पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता सुनिश्चित करना जैविक खेती का सबसे कठिन कार्य है। क्योंकि इस तत्व का जमीन में संचय नहीं किया जा सकता। वैज्ञानिकों के अनुसार नत्रजन की मात्रा जमीन के जैविक कार्बन पर निर्भर करती है।

जमींन में जैविक कार्बन की मात्रा तापमान पर निर्भर करती है। जिन क्षेत्रों मे औसत तापमान अधिक रहता है वहां जमींन का कार्बन जलकर कार्बन डाई आक्साईड गैस बनकर हवा में उड़ जाता है तथा जमींन में कार्बन की कमी बनी रहती है।

पौधों की नत्रजन की आवश्यकता की पूर्ति निम्नलिखित तरीकों से की जानी चाहिए-

- किसान भाई खेतों में एक ही प्रकार की फसल हर साल नहीं उगाऐ। साल में एक बार दाल वाली फसल अवश्य बोनी चाहिए। बाजरा, मक्का, ज्वार, तिल के बाद सर्दी में चना बोएं । दाल वाली फसल की जड़ों में राईजोबियम की गांठें यूरिया की छोटी-छोटी फैक्ट्रियों का काम करती है।
- फसलों के अवशेष में आधा प्रतिशत की मात्रा में नत्रजन होता है, इसलिए इसका कम्पोस्ट बनाकर उपयोग करें। इससे पोषक तत्वों के साथ भूमि में कार्बन की मात्रा भी बढ़ती है, जो जमीन में नत्रजन को रोकने के लिए सहायक है।
- पशुओं के पेशाब में गोबर से भी अधिक मात्रा में नत्रजन होता है। इसका समुचित उपयोग करने के लिए पशु के बैठने के स्थान पर राक फास्फेट की थोड़ी-सी मात्रा डालनी चाहिए। पशु के पेशाब में मिले हुए राक फास्फेट को सुपर कम्पोस्ट बनाने के काम लेना चाहिए, इससे कम्पोस्ट में नत्रजन की मात्रा में काफी बढ़ोतरी हो जाती है।
- उपलब्ध गोबर व कचरे से केंचुआ खाद (वर्मी कम्पोस्ट) तैयार करनी चाहिए। वर्मी कम्पोस्ट में पोषक तत्वों की मात्रा सामान्य कम्पोस्ट के मुकाबले ज्यादा होते है।
- दलहनी फसलों के बीजों को राईजोबियम जीवाणु खाद से उपचारित करके बुवाई करें। जड़ों में उपस्थित रहकर यह जीवाणु वातावरण की नत्रजन को सीधे पौधों में उपलब्ध कराता है, साथ ही अगले मौसम में उगाए जाने वाली फसल के लिए भी जमीन में नाइट्रोजन की उपलब्धता बढ़ाता है।
- बाजरा, ज्वार, मक्का, सरसों, गेहूँ व जौ के बीजों को एजोटोबेक्टर जीवाणु खाद से उपचारित करके बुवाई करनी चाहिए। यह जमीन में स्वतन्त्र







रूप से रहकर हवा की नत्रजन को खाता रहता है तथा बढ़ता रहता है। कुछ समय बाद यह जीवाणु मर जाता है और इसके शरीर से नत्रजन कुछ समय बाद पौधों को मिल जाती है। इसी प्रकार धान की फसल में एजोला का उपयोग कर हवा की नत्रजन का प्रयोग संभव है।
- ग्वार, ढ़ेंचा, सनई, चंवला की हरी खाद से जमीन में नत्रजन व कार्बन की मात्रा बढ़ जाती है।
- नीम, अरण्डी, करंज की कलियों का उपयोग भी नत्रजन की आपूर्ति के लिए किया जाता है। बुवाई के एक माह पहले 1.0-1.2 टन खली को एक हैक्टेयर खेत में मिलाए।
- मुर्गी की खाद, भेड़-बकरियों की मेंगनी, हड्डी की खाद आदि का उपयोग जमीन में पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाता है, अतः इनका उपयोग भी फायदेमंद रहता है।

उपरोक्त सभी उपायों को समन्वित रूप से अपनाकर नत्रजन की आपूर्ति बनाए रखी जा सकती है।

### जैविक विधि से फसलों की सुरक्षा:

पौधों के हानिकारक कीड़े, बीमारियाँ एवं खरपतवार नाशीजीव की श्रेणी में आते है। इनका प्रकोप फसल को चोपट कर सकता है। अतः नाशीजीव की अवस्था पर प्रभावी प्राकृतिक तरीकों का उपयोग कर इनके प्रकोप का स्तर न्यूनतम रखना चाहिए।

### खरपतवार प्रबंधन:

खरपतवार फसल के छुपे दुश्मन है । ये फसल के हिस्से की खुराक-पानी एवं हवा खा जाते है। इन पर कीड़े व रोग भी पलते है। इससे फसल की उपज बहुत कम हो जाती है। अतः ऐसे प्रयास करें कि खेत में खरपतवार नहीं उगें। इसके लिए साफ बीज की बुवाई करें। खेत में अच्छी तरह सड़ी हुई कम्पोस्ट या गोबर की खाद डालें।

खरपतवारों कों बीज बनने से पहले ही उखाड़कर नष्ट कर दें। इससे अगले साल कम खरपतवार उगेगें।

खड़ी फसलों में खरपतवारों की मार शुरू के 20-30 दिन में ज्यादा पड़ती है। इसलिए खरपतवारों में उगते ही निंदाई-गुडाई करनी चाहिए।

### जैविक कीट प्रबंधन:

फसलों को हानि पहुँचाने वाले कीट मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते है। पहले प्रकार के कीट पौधों का रस चूसकर एवं वायरस का संक्रमण फैलाकर नुकसान पहुँचाते है। इनमें मोला या चेंपा, हरा तेला, थ्रिप्स, लाल मकडी, सुन्दर झंगा (पेन्टड बग) आदि प्रमुख कीडे है। इन हानिकारक कीडों के प्रकृति में अनेक दुश्मन मौजूद है, जैसे लेडीबर्ड बीटल, क्राईसोपला व मकडी। क्राईसोपला अब प्रयोगशाला में तैयार किए जाने लगे है।

दूसरे प्रकार के कीड़ों में सुण्डियाँ (लट) प्रमुख हैं, जो फसलों को काटकर एवं कुतरकर हानि पहुंचाती है। प्रकृति में इन कीड़ों के दुश्मन भी मौजूद है, ट्राईकोग्रामा के द्वारा लटों को अण्डों से निकलने से पहले नष्ट किया जा सकता है। अतः फसल के अनुसार इनका प्रयोग किया जा सकता है।

तीसरे प्रकार के कीड़े भूमि में रहते है। ये फसल की जड़ो को काटकर खाते है। इनमें दीमक व सफेद लट प्रमुख है। कच्चा देशी खाद बिना सड़े अवशेष खेत में डालने से दीमक का प्रकोप बढ़ता है। अतः अच्छी तरह सड़ी-गली कम्पोस्ट खेत में बुवाई से एक माह पहले मिला देवें। दीमक नमी से दूर भागती है, अतः खेत में नमी की भी कमी नहीं रहनें देवें। दीमक के बिल को खोदकर रानी को नष्ट कर देवें।

चौमासे की पहली भारी वर्षा के समय सफेद लट के प्रौढ़(भृंग) जमीन से निकलते है। रात में कीड़े नीम, बेर, खेजड़ी को खाते है। साथ ही प्रकाश पर भी आते है। पेड़ों को खाते भृंग को दुसरे दिन इकट्ठा कर मार दें। इसके अलावा प्रकाश पाश के द्वारा भी भृंगों को पकड़ कर मार दें।

लट से बचने के लिए एक हेक्टेयर भूमि में 10-12 टन नीम की खली मिलाएँ। इससे सभी प्रकार के कीड़ों से फसल बची रहती है।

खेत मे दोनो प्रकार यानि दुश्मन कीट एवं मित्र कीट मौजूद है, तो फसलों में किसी भी प्रकार की दवाओं के छिडकाव की जरूरत नहीं होती है। लेकिन मित्र कीटों की उपस्थिति के बावजूद भी कभी-कभी कीड़ों का प्रकोप अधिक हो सकता है। ऐसी स्थिति में सुण्डियों के नियंत्रण के लिए बी.टी., एन.पी.वी. आदि का उपयोग प्रभावी होता है।

नीम की पत्तियों का रस, नीम का तेल, नीम की खली एवं नीम के तेल में उपस्थित अजाडिरेक्टिन बहुत प्रभावी कीटनाशक का काम करता है। इनके अतिरिक्त फेरोमोन ट्रेप, प्रकाश पाश द्वारा भी प्रौढ़ कीटों को पकडकर नष्ट किया जा सकता है।

### बीमारियों का जैविक प्रबंधन

जैविक तरीकों से बीमारियों की रोकथाम कीड़ों के बजाय कठिन होती है। अतः रोगों से बचने के लिए शुरू से सावधान रहना आवश्यक है।

किसानों को फसल चक्र अपनाना चाहियें जिससे मृदा एवं बीज जनित बीमारियों से बचाया जा सके।

रोग प्रभावित पौधों को खेतो से उखाड कर जला देना चाहियें ।

फसलों के बीजों को जैविक उत्पादों (ट्राईकोडर्मा, नीम उत्पाद) से उपचारित करके बोना चाहियें।

# लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम, 2012

**इस अधिनियम की ज़रुरत क्यों पड़ी ?**

**उदाहरण के माध्यम से बताना चाहते है की .....**

23 साल की फिजियोथिरेपिस्ट निर्भया अपने एक दोस्त के साथ साउथ दिल्ली के एक थियेटर से फिल्म देखकर लौट रही थी। दोनों मुनिरका में एक ऑटो-रिक्शा का इंतजार कर रहे थे। जहाँ से दोनों को द्वारका अपने-अपने घर पर जाना था। तभी वहां एक ऑफ-ड्यूटी चार्टर बस आती है। उसमें ड्राइवर समेत कुल छह लोग होते हैं। निर्भया और उसके दोस्त को बैठने के लिए पूछा जाता है। बस चल पड़ती है मगर गलत दिशा में। दोनों को एहसास होता है कुछ गलत है क्योंकि बस के दरवाजे बड़ी कड़ाई से बंद किए गए थे। निर्भया के दोस्त ने विरोध किया तो उस पर बस में मौजूद 6 लोग चिल्ला पड़े, लड़ाई हो गई। वो सब शराब के नशे में धुत थे और निर्भया के साथ बदतमीजी करने लगे। निर्भया के दोस्त पर लोहे की रॉड से वार कर उसे बेहोश कर दिया गया। वो दरिंदे निर्भया को चलती बस के पिछले हिस्से में ले गए और बारी-बारी से उसका रेप किया। उनमें से एक अपराधी जो नाबालिग था, उसने जंग लगा लोहे का एक सरिया निर्भया के प्राइवेट पार्ट में डाल दिया। अगस्त 2013 में नाबालिग अभियुक्त को जुवेनाइल कोर्ट ने रेप और हत्या का दोषी घोषित करते हुए 3 साल के लिए बाल सुधार गृह भेज दिया ।

**लैंगिक अपराध जैसे- लैंगिक हमला, लैंगिक उत्पीड़न, अश्लील साहित्य आदि से बालकों का संरक्षण करने के लिए भारत सरकार ने एक विशेष कानून बनाया है जिसे "लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम, 2012" कहा जाता है ।**

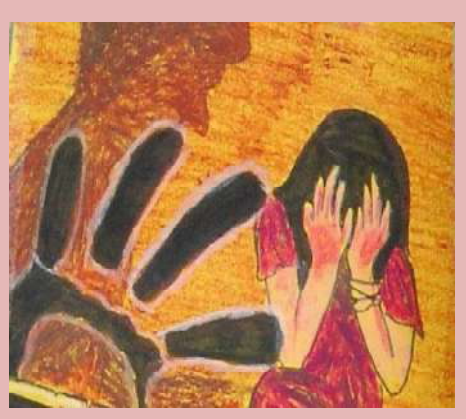

## पोक्सो (POCSO) अधिनियम की विशेषताएं

- **अनिवार्य रिकॉर्डिंग** स्थानीय पुलिस या विशेष किशोर पुलिस इकाई **(SJPU)** द्वारा अपराध संबंधी सूचना को अनिवार्य रूप से दर्ज करना ।
- चिकित्सकीय परीक्षा एवं आपातकालीन देखभाल **चिकित्सकीय देखभाल** ।
- जांच के दौरान बाल मैत्री पूर्ण/बाल अनुकूल प्रक्रियाएं ।
- दिव्यांगजन के लिए दिव्यांगजन का अधिकार अधिनियम-**2016** के प्रावधानों के तहत समुचित उपाय और देखरेख ।
- अधिनियम क्रियान्वयन की निगरानी ।
- पुलिस द्वारा बालक का प्रारम्भिक आंकलन रिपोर्ट फॉर्म **B** में **FIR** दर्ज होने के **24** घंटे के अंदर पूरा किया जाना और बाल कल्याण समिति को सूचित किया जाना ।
- **अनिवार्य रिपोर्टिंग** लैंगिक अपराध किये जाने या अपराध होने की आशंका/संभावना की जानकारी **स्थानीय पुलिस या विशेष किशोर पुलिस इकाई (SJPU)** को देना ।
- बाल कल्याण समिति द्वारा बालक की **देखभाल और संरक्षण की आवश्यकता का**
- दूभाषिये, अनुवादक, विशेष शिक्षक, विशेषज्ञ और सहायक व्यक्ति से सम्बन्धित प्रावधान ।
- लैंगिक अपराध से सुरक्षा, रिपोर्टिंग, बालकों के अधिकार, कर्तव्यधारक की भूमिका इत्यादि से संबंधी प्रावधान एवं सम्बन्धित विभिन्न पहलूओं की जानकारी का **प्रचार प्रसार और क्षमता निर्माण** ।
- बालकों के आवासीय संस्था या बालक की सुविधा प्रदान करने वाली संस्था जैसे- विद्यालय, क्रेच, खेल अकादमी या बालकों के नियमित संपर्क में आने वाले किसी भी संस्था द्वारा बालक के सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक कर्मचारी, नियमित या संविदात्मक, शिक्षण या गैर शिक्षण का समय- समय पर पुलिस सत्यापन और पृष्ठभूमि की जांच सुनिश्चित किया जाना ।
- जांच की पूरी प्रक्रिया के दौरान बाल कल्याण समिति द्वारा बालक को **सहायक व्यक्ति** प्रदान किये जाने का प्रावधान ।
- बालक की निजता और गोपनीयता बनाये रखे जाने संबंधी प्रावधान ।
- न्यायालय द्वारा बंद कमरे में मामले का विचारण ।
- **18** वर्ष तक की आयु का पीड़ित और अपराधी किसी भी लिंग (बालक या बालिका) का हो सकता है ।
- त्वरित विचारण के लिए जिला स्तरीय विशेष न्यायालय की स्थापना ।
- बालकों को सम्मिलित करने वाली अश्लील सामग्री की रिपोर्टिंग- **SJPU**, स्थानीय पुलिस या साइबर क्राइम पोर्टल ।
- पुलिस द्वारा **POCSO** अधिनियम या अन्य कानून के अधीन उपलब्ध हक़दारियों एवं सेवाओं के बारे में फॉर्म **A** के अनुसार सूचित किये जाना ।

यह **14 नवम्बर 2012** को सम्पूर्ण भारत में लागू हुआ था ।

## " दिव्यांग बालक- बालिकाओं का भविष्य कागजों के फेर में उलझा "

जब चाइल्ड लाइन टीम जमीनी स्तर पर जाकर देखती हैं तो कुछ अलग ही जानकारी मिलती है । जिससे टीम का दिल भी दुखने लगता है कि आखिरकार इतने कर्मचारी, इतने अधिकारी एवं सरकार के इतने दावों के बावजूद भी धरातल पर स्थिती सुधर क्यों नहीं रही है। वाग्धारा संस्था द्वारा संचालित चाइल्ड हेल्प लाइन 1098 की टीम द्वारा ग्राम चौपाल का आयोजन पंचायत समिति घाटोल कि ग्राम पंचायत गोलियांवाड़ा में हुई तो अनेकों समस्या निकल कर सामने आई, जिससे दिल पर बड़ा आघात पहुंचा। 9 दिव्यांग बालक- बालिका सामने आए जिनको अभी तक सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभ मिलना कोसों दुर है। दिव्यांग जनों के परिजनों बताया की वह हर बार शिविर में भी जाते हैं,परंतु वहां पर खानापूर्ति करके बस यही कहते कि आपका काम हो गया, ये कह कर घर भेज देते हैं| हम अनेकों बार शिविर में गए, परन्तु अभी तक कुछ नहीं हो पाया, काफी भागदौड़ कि आखिर थक- हार कर हम सरकार के आगे लाचार हो जातें हैं। चाइल्ड लाइन टीम के जिला समन्वयक परमेश पाटीदार ने बताया कि ग्राम पंचायत गोलियां वाड़ा में चौपाल करने के दौरान 9 दिव्यांगजन निकल कर आए चार महिलाएं ऐसी थी जिनको हाथों की लकीरे नहीं आने के कारण पेंशन से वंचित होना पड़ रहा है। वह हंसते हुए बता रही थी मेरी तो उम्र हो गई, फिर भी नहीं आ रही है अब क्या करें। अनीता यादव ने बताया कि मेरा पुत्र हिमेश यादव की उम्र 14 वर्ष होने आ गयी है परंतु अभी तक आधार कार्ड नही बन पाया है क्योंकि हाथ, पैर मुडे हुए हैं। कई बार हिमेश को घाटोल एवं कैंपों में आधार कार्ड बनवाने के लिए लेकर गई परंतु आज तक नहीं बन पाया, आप देख सकते हैं कि मैंने जन्म से लेकर अब तक किस तरह से पाला होगा। मुझे इसकी देखरेख करने में पूरा समय निकल जाता है| सभी काम मुझे ही इसके करने पड़ते हैं बालक को किसी भी प्रकार की कोई योजना का लाभ नहीं मिल पाया है| ममता देवी के द्वारा बताया गया कि मेरा पुत्र रोहित खराड़ी इसी तरह खाट पर पड़ा रहता है जन्म से लेकर यह पुरे शरीर से दिव्यांग है ना आधार कार्ड बना, ना आज तक किसी योजना का लाभ मिला, पिता ने बड़े उदास मन से कहा कि आज आपने बुलाया तो मैं आना ही नहीं चाहता था| अनेकों बार अभियानों में लेकर गया, लेकिन कुछ नही हुआ, आज फिर बड़ी उम्मीद के साथ आया हूं कुछ न कुछ जरूर लाभ होगा। टीम सदस्य कमलेश बुनकर एवं बासुडा कटारा ने पूरे गांव में चर्चा की तो फिर एक साथ में पांच दिव्यांगजन निकलकर आए, बालिका लक्ष्मी देवी की उम्र 16 वर्ष होने की है, परंतु अभी तक ना दिव्यांग पेंशन मिल पाई और ना ही किसी तरह का लाभ मिल पाया, मैं तो अंधी हूं, परंतु सरकार ने अभी तक मेरा दुःख दर्द नही देखा। यही हाल कुलदीप का है वह अचानक चलते -चलते गिर जाता है हिलता- डुलता रहता है| माता कांता देवी ने बताया कि क्या करें जो इन सब लोगों ने बताया यही मेरा दर्द भी है । मैं भी इसको हर बार लेकर गई परंतु आज तक मुझे भी कुछ लाभ नहीं हो पाया। वही पर चम्पा भी कहने लगीं मैं खुद तो जन्म से दिव्यांग हूं, परंतु मेरे जैसे जीवन साथी मिल जाने के कारण उन्होंने शादी की अच्छे से जीवन व्यतीत हो रहा था| अचानक भगवान ने किस तरह से करवट ली कि मेरी बालिका आज 16 वर्ष की हुई है| गत 2 वर्षो से वह मानसिक विमन्दित है यह बताने में मुझे शर्म आती है की बालिका अपने कपड़े निकाल देती है| मैं लंगड़ी हूं चल नहीं पाती, दौड़ कर कहां उसे लेने जाऊं, मुझे अभी तक ट्राई साइकिल नही मिली है, ना व्हीलचेयर, ना ही बैसाखी मिल सकी| मेरे पति को आप देख सकते हो उम्र हो गई परंतु वृद्धा पेंशन से वंचित है| उसी दौरान गांव के धीरज ने बताया कि भाई साहब मेरा पुत्र भी चल नहीं पाता है सभी कार्य मै खुद करता हूं अब सरकार तक हमारी आवाज पहुँचाने कि आपकी जिम्मेदारी है ताकि सरकार हमारी ग्राम पंचायत में समस्त दिव्यांग जनों को योजनाओं से लाभान्वित किया जा सके। राम लाल ने बताया कि मैंने 12वीं कक्षा अच्छे अंको से उत्तीर्ण कर ली अचानक मेरे एक्सीडेंट हो जाने के कारण मै दिव्यांग हो गया परंतु कोई लाभ नही मिला है| मेरी दुर्घटना से मेरा पूरा परिवार गरीब हो गया अब मैं इससे आगे आपको कुछ नहीं बता सकता|

कमलेश बुनकर के द्वारा बताया गया कि गांव में अधिकांश लोग दिव्यांग हैं| दिव्यांग उमेश को पिता नारायण लाल ने गोद में उठाकर हमारे सामने लेकर आया ओर कहा कि इसकी भी सुनवाई करना अगर हो सके तो इसकी वेदना भी सरकार तक पहुंचाना ताकि हमारा कुछ भला हो सके| टीम ने अवगत करवाया है कि सभी के आधार कार्ड के लिए हम प्रशासन को अवगत करवा कर बनवाने में मदद करेंगे| साथ ही दिव्यांग पेंशन आधार कार्ड बनवाने एवं व्हीलचेयर के लिए प्रशासन को चाइल्ड लाइन टीम द्वारा अवगत करवाने के लिए जिला प्रशासन को अवगत करवा दिया गया है और आप सभी की मदद अवश्य की जाएगी ।

**लैंगिक अपराध की अनिवार्य रिपोर्ट क्या है ?**

POCSO अधिनियम की धारा 19 (1) के तहत लैंगिक अपराध की अनिवार्य रिपोर्टिंग का अर्थ है कि किसी व्यक्ति (जिसके अंतर्गत बालक भी है) को यह आशंका है कि अधिनियम के तहत अपराध होने की आशंका या संभावना है या जानकारी रखता है कि ऐसा कोई अपराध किया गया है, वह ऐसी जानकारी विशेष किशोर पुलिस इकाई (SJPU) या स्थानीय पुलिस को उपलब्ध करने की बाध्यता है ।

कानून को संक्षेप में **पोक्सो अधिनियम POCSO Act** कहा जाता है ।

**क्या अपराध की रिपोर्ट करने में विफलता पर बालक को किसी प्रकार की सजा हो सकती है ?**

नहीं । POCSO अधिनियम की धारा 21 (3) के तहत, अपराध की रिपोर्ट नहीं करने पर सजा का प्रावधान बालक पर लागू नहीं होता है ।

**मीडिया, होटल, लॉज, हॉस्पिटल, क्लब, स्टूडियो और फोटो चित्रण संबंधी सुविधाओं को भी अधिनियम के तहत अनिवार्य रिपोर्टिंग की बाध्यता है ?**

हाँ । POCSO अधिनियम की धारा 20 के अनुसार मीडिया, होटल, लॉज, हॉस्पिटल, क्लब, स्टूडियो और फोटो चित्रण सुविधाओं का कोई कर्मी (चाहे किसी भी नाम से ज्ञात हो या नियोजित व्यक्तियों की संख्या हो) के ध्यान में किसी भी माध्यम द्वारा, कोई सामग्री या वस्तु जो बालक या बालकों के अश्लील प्रदर्शन शामिल है)। यथास्थिति, ऐसी जानकारी विशेष किशोर पुलिस इकाई (SJPU) या स्थानीय पुलिस को उपलब्ध करने की बाध्यता है ।

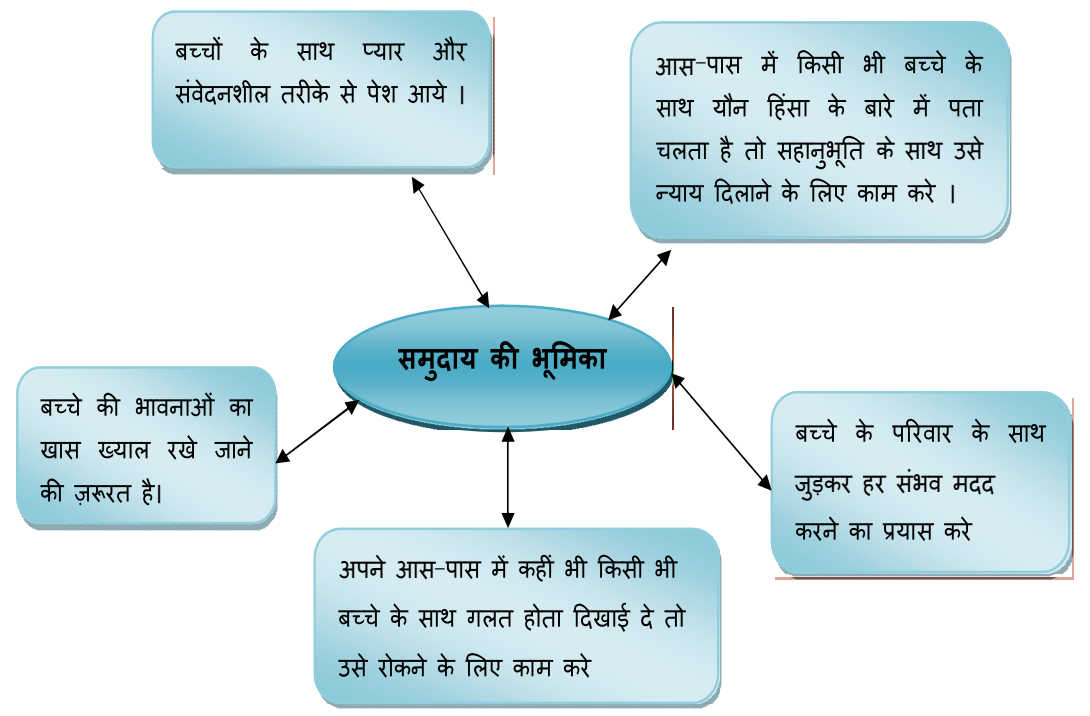

# जनजातिय स्वराज संगठन सहयोग इकाई की गतिविधियाँ

## माही

**राम - राम**
**"जय गुरु साथियों"**

आशा है आप सभी स्वस्थ एवं सुरक्षित होंगे| मैं एक पुस्तक का अध्ययन कर रहा था, जिसमे एक अध्याय "समाचार का व्रत रखिये" था| इस अध्याय में लेखक ने कहा की दुनिया में किसी भी जगह अखबारों में दो प्रकार की खबरे प्रकाशित की जाती है, कई खबरे सकारात्मक होती है और कुछ खबरे नकारात्मक होती है परन्तु हम दोनों खबरे पढ़ते है | हमारा दिमाग किसी एक बात की ओर नहीं जाता बल्कि अगर मै कहू की नकारात्मक खबरो कि तरफ जल्दी जाता है और एक नकारात्मक ऊर्जा दिमाग के माध्यम से हमारे शरीर में प्रवेश करती है |

साथियो विगत कुछ वर्षो से हमारे क्षेत्र में भी घटनाऐ हुई है जो कि हमारे समुदाय के लिए हितकारी नहीं है, हमे सोचना होगा कि इन घटनाओं स्मरण करके किस दिशा की और हम बढ़ रहे है क्या हम आज बाहर की दुनिया जैसे बनना चाहते है जो की सिर्फ बाजार पर निर्भर है और पुरखो द्वारा दिया गया ज्ञान भूलने को अग्रसर है| निश्चित ही एक बार जब हम स्वयं का मूल्यांकन करेंगे तो बहुत प्रश्नों के जवाब हम स्वयं भी नहीं दे पाएंगे, समुदाय से यही आग्रह करना चाहता हूं कि इन बातो को गंभीरता से ले और गाँव में एक प्रेरणा बने|साथियो जब व्यक्ति खुद को अलग रूप में स्थापित करता है तो समस्याएँ आना निश्चित है क्योंकि पेड़ में सबसे ऊँची डाली पर ही श्रेष्ठ फल लगता है इसका कारण है की जो डाली ऊंचाई तक गई उसने काफी परेशानियो को झेला है तब उसमे सबसे श्रेष्ठ फल देने की क्षमता विकसित हुई है |

**सच्ची खेती-** फरवरी माह में सक्षम समूह कि बहनों के साथ संवाद किया। पेड़-पौधे हमारे जीवन का आधार है। जब मनुष्य प्रकृति की गोद में जाता है तो उसे मानसिक शांति प्राप्त होती है। प्राचीन काल में ऋषि-मुनि भी वन में तपस्या कर ज्ञान प्राप्त करते थे। पेड़-पौधे नही होते, तो जीवन संभव नही होता, जीने के लिए हवा पेड़ -पौधे ही प्रदान करते हैं। वृक्ष हमें प्राकृतिक आपदाओ से बचाते हैं। ये गिरते जल स्तर को बचाने व बारिश लाने में भी सहायक हैं। वायुमंडल को स्वच्छ व संतुलित रखने में वृक्षों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। हमें आने वाली परेशानियों से पार पाने के लिए वृक्षों का संरक्षण हर हाल में करना होगा। पेड़ -पौधे सेहत के लिए लाभदायक हैं। जैसे कि नीम औषधीय पौधा है, गिलोये खांसी के लिए लाभदायक होता है। अमरूद मधुमेह के रोगियों के लिए रामबाण का काम करता है।

साथियो आज भी जनजातिय समुदाय द्वारा औषधीय पौधो को बचाकर रखता है, इनकी विशेषता एवं उपयोगिता शायद आदिवासी समुदाय के अलावा कोई और समझ सके, साथियों हमे प्रकृति पूजक क्यों कहा जाता है? इसका वर्णन करने की आवश्कता नहीं है । विगत दो माह से सुखमणी पर संवाद किया जा रहा है। मुझे बहुत ख़ुशी है कि हमारे साथ नियमित रूप से जुड़ी हुई बहनो के यहाँ पर 04 से 05 प्रकार की सुखमणी और इतनी ही मात्रा में बीज हमारे पास उपलब्ध है। मैं आपसे यही आग्रह करूंगा कि यह विचार आने वाले पीढ़ीयों में भी जीवित रहे ।

**सच्चा बचपन-** पिछले माह हमने बच्चो पर अभिभावकों की बढ़ती अपेक्षाओ पर संवाद किया था । हमने बात रखी थी आज के युग में अभिभावक चाहते है कि हमारा बच्चा अपने हर कार्य में श्रेष्ठ हो, चाहे उसके लिए उसको कुछ भी करना पड़े परन्तु इसी क्रम में बच्चे के दिमाग में मानसिक अवसाद जन्म लेता है जो सिर्फ उसके लिए ही नहीं अपने परिवार के लिए भी खतरा बनता है । कई बार देखा जाता है कि बच्चे को ज्यादा गुस्सा तब आता है, जब चीजें उसके मुताबिक न हों। बच्चे को महसूस हो कि उसके साथ गलत हो रहा है । कई बार ठीक से बात को नही कह पाने के कारण भी बच्चे गुस्सा करते हैं। सबसे खराब स्थिति तब हो सकती है, जब बच्चे को किसी बात के लिए दोषी ठहराया जाए, जबकि उसकी गलती न हो तो अभिभावको को चाहिए कि अपने बच्चे के साथ मौज- मस्ती करे, प्यार से बात करे, उनके साथ खेलें, उनसे बात करें, उन्हें गले लगाएं, उनके विचारो को समझने का प्रयास करे, ऐसी बातो का समर्थन ना करे कि सिर्फ वही सही है, परन्तु हां हर कार्य के लिए उन्हें टोकना बंद करे उसे प्यार से समझाएं| यह सब करने से बच्चे को अच्छा लगेगा और आपको भी अच्छा लगेगा, और वास्तव में प्राकृतिक हार्मोन जारी करता है ।

**सच्चा स्वराज-** जनजातिय स्वराज संगठन अपनी भूमिका को समझने लगे है| साथ ही विभिन्न प्रकार कि समस्याओं को व्यक्तिगत रूप से छोड़ कर सामुदायिक समस्याओ को प्राथमिकता देने लगे है|जिसमे पिछले वर्ष में कई बार समस्याओं के समाधान के लिए उपखंड अधिकारी एवं सम्बंधित विभाग को अवगत करवाया है| कई समस्याओं का समाधान करवाने में सफलता हासिल कि है, निश्चिंत ही संगठनो के प्रयास अब रंग लाने लगे है जैसे कैनाल मरम्मत, फसल बिमा, पशुटिकाकरण, विभिन्न सामाजिक योजनाओं के लिए पात्र वंचित हितधारको के काम होने लगे है| ऐसा अक्सर संगठन की बैठकों में सुनता हूं तो लगता है कि संगठन अपनी भूमिका में आने लगे है एवं समुदाय कि आवाज बनकर विभिन्न मुद्धो पर बात रखने लगे है|

गत माह संगठन में जब बात चल रही थी कि अभी भी कुछ समस्याओंका समाधान उपखंड स्तर पर नहीं पा रहा है तो दो संगठनो ने निर्णय लिया है कि इस माह में जिला कलेक्टर महोदय को ज्ञापन देकर आग्रह किया जायेगा कि पेयजल, आंगनवाडी को लेकर समस्याएँ नियमित है| हमारे समाज/समुदाय में आज निःस्वार्थ भाव से समुदाय की समस्याएँ उठाने की बाते सगंठन एवं समुदाय के लोग करने लगे है| एक समय में इन लोगो की संख्या सैकड़ो से लाखो में होगी और हम तभी सफल होंगे |

साथियो इस माह में हमें कार्ययोजना बनानी है| जिसमे सबसे पहले जायद में मुंग करने वाले किसानो को चिन्हित कर सरकार से बीज की मांग रखना,आगामी समय में नहरों की मरम्मत पर बात रखना,पेयजल की नियमित समस्याएँ, बच्चो के विद्यालयों में शौचालयो की स्थिति मुख्य रहेगी जो की विगत दो माह से संगठनो की मासिक बैठकों में मुख्य मुद्धा रहा है |

## हिरन

**" होली ना राम राम, जय गुरु सभी साथियों को "**
**|| होलिया री उड़े रे गुलाल, आयो रंग फागन रो ||**

वाग्धारा संस्था की ओर से सभी जन समुदाय एवं संगठन साथियों को होली के इस पावन पर्व की हार्दिक शुभकामनायें| आप सभी रंगों के त्यौहार पर एक- दुसरे को मदद करने का संकल्प ले, इसी विचार के साथ आप सभी को जय गुरु !!

**सच्चास्वराजः-** सच्चा स्वराज के तहत हिरन इकाई के 356 गाँवो कि 4 पंचायत समितियों के साथ मिलकर ग्राम विकास योजना निर्माण के लिए सरपंच, वार्ड पंच व संगठन के साथियों का प्रशिक्षण किया जाएगा| प्रशिक्षण में मृदा स्वराज, जल सरक्षण एवं सामुदायिक और व्यक्तिगत कार्यो को प्राथमिकता देना रहेगा| सभी ग्राम सभाओं में अपनी-अपनी ग्राम पंचायत से प्रस्ताव जमा कराए जायेंगे| इस माह 9 जनजातिय स्वराज संगठनों की मासिक बैठक का आयोजन होगा| इस माह प्रत्येक संगठन से हाट बाजार में अपना स्वयं का व्यवसाय करने हेतु युवाओं का चयन करने के उपरांत आजीविका बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाएगा| जिससे युवाओं का पलायन रुकेगा एवं स्थानीय आजीविका का स्रोत मिलेगा| हाट बाजार की महत्वता बढ़ेगी एवं स्थानीय उत्पादों का स्थानीय स्तर पर बिक्री हेतु स्थान मिलेगा| बाजना उपखंड में जनजातीय स्वराज संगठन के 400 युवाओं को प्रशिक्षित करने के उपरांत अपने गाँव, समुदाय व सामूहिक विकास कार्यो में सक्रीय भूमिका निभाने के लिए तैयार किया जायेगा |

**सच्चा बचपन :-** ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति की मासिक बैठको का आयोजन किया जाएगा| बैठको में ग्राम विकास योजना निर्माण, बालिका शिक्षा एवं सम्बंधित योजनाओं से वंचित बच्चो की सूचि तैयार करना| बच्चो को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना एवं खेल- खेल के माध्यम से बच्चो का शारीरिक और मानसिक विकास करना रहेगा| नरिसिंग स्कूल कार्यक्रम के तहत कुशलगढ़ और सज्जनगढ़ ब्लाक में 9 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संचालित इस कार्यक्रम में सभी बच्चो की शारीरिक जाँच की जा रही है जिसमे बच्चो के स्वास्थ्य के बारे में पता लगाया जा रहा है| स्वास्थ्य को बेहतर बनने के लिए प्रयास जारी है जो आगामी माह में भी जारी रहेंगे |

इसका उद्देश्य बच्चो की शारीरिक और मानसिक स्थिती का आंकलन करना, जिससे उनके स्वास्थ्य और शिक्षा को बेहतर बनाया जा सके| इस माह बच्चो के लिए लगाईं गयी पोषण वाडियों का नियमित रूप से भ्रमण करना और नई पोषण वाडीयां लगवाने पर जोर दिया जा रहा है| पोषण स्वराज अभियान के दौरान कुपोषित और अतिकुपोषित बच्चो का नियमित रूप से फ़ॉलोप लिया जा रहा है, जिसमे बच्चो को उचित खान-पान और नियमित स्वास्थ्य जाँच के बारे में बताया जा रहा है| घर पर बच्चो का सम्पूर्ण आहार बनाने के लिए तिरंगा भोजन (तीन रंग का भोजन) जिसमे सफ़ेद– अनाज, पिला-दाल, अंडे और हरा-हरी सब्जियाँ तथा फल शामिल हो इस तह के भोजन को रोजाना बच्चो को खिलाना जरुरी है |

**सच्ची खेतीः-** इस माह जैविक खेती को ध्यान में रखते हुए सच्ची खेती के पांचो घटक जिसमे जल, जंगल, जमीन, जानवर व बीज हेतु ग्राम विकास योजना निर्माण में ग्राम पंचायतो में निजी व सार्वजनिक कार्यो के लिए दिए गये प्रस्तावों के बारे चर्चा एवं योजना बनाई गयी| पंचायत राज सदस्यों का एक दिवसीय प्रशिक्षण किया जाएगा, जिसमे गाँवो में सच्ची खेती को बढावा मिले| जनजातीय समुदाय में महिला किसानो का प्रत्येक गाँव में एक सक्षम समूह बना हुआ है| सक्षम समूह कि सभी सदस्यों को हर माह प्रशिक्षित करना और उन महिलाओं के द्वारा गाँव स्तर पर सामुदायिक बीज प्रबंधन प्रणाली को सुदृढ़ करना, जिससे गाँव के लोगो को बाजार से बीज नहीं लाना पड़े और एक- दुसरे को आदान-प्रदान करे|

इस माह लगभग सभी तरह की फसल की कटाई हो जायेगी, लेकिन हम किस तरह से बीज का रख-रखाव करे, ताकि अगले साल हमें बाजार से बीज नही लाना होगा| बीज को बचाकर रखना हम- सब की जिम्मेदारी है| इस हेतु स्थानीय स्तर पर बीज प्रबंधन प्रणाली की प्रक्रिया शुरु करना अति-आवश्यक है|

जैविक खेती करने वाले किसानो को प्रमाण पत्र दिलवाना जिससे किसानो की पहचान बने| इसी क्रम में 56 गांवों में बीज संरक्षण प्रणाली के संदर्भ में अवगत करवाया जायेगा|

सच्ची खेती अंतर्गत जैविक तरीकों से परम्परागत खेती को वापस बहाल करवाने हेतु प्रयास किये जा रहे है तथा जैविक कीटनाशक जैविक खाद इत्यादि बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है| इस माह में PGS ग्रुप की कुल 127 बैठको का आयोजन किया जायेगा| किसानों को जैविक कृषि पद्धति अपनाकर इससे होने वाले फायदे के बारे में बताया गया है| इस माह बीज स्वराज के अंतर्गत बीज का चयन एवं संग्रहण करना जिससे बीज को बचाया जा सके क्योंकि बीज ही जीवन है, बीज ही भविष्य है |

## सामुदायिक विकास में युवाओं की भूमिका

इस अंक में जानेगे कि किस तरह से " युवा साथी" अपने स्थानीय क्षेत्र के विकास में जनजातिय स्वराज सगंठनों के साथ मिलकर अपनी भूमिका देख रहा है - 'युवा' को अगर उल्टा करके हम पढें तो हमारे सामने 'वायु' प्रकट हो जाती है। जिस प्रकार वायु मानव शरीर के लिए आवश्यक है, उसी प्रकार युवा अपने क्षेत्र में सामाजिक , आर्थिक विकास को सशक्त करने में अहम भूमिका अदा कर सकता हैं।

- ग्रामीण समुदाय एवं प्रशासन के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में स्वराज सगंठनों के माध्यम से अपने अच्छे अनुभवो को साझा करना|
- समावेशी विकास के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक,राजनीतिक बदलाव को ध्यान में रखते हुए स्वयं सेवक के रूप में काम करना|
- समय -समय पर श्रमदान गतिविधियों को स्वराज सगंठनों के साथ मिलकर आयोजित करना जैसे : वृक्षा रोपण,हलमा, गाँव में साफ़ सफाई इत्यादि|
- समुदाय में विभिन्न आकस्मिक घटनाओं से हुए नुकसान की वकालात करना|
- समाज और अपने क्षेत्र के विभिन्न मुद्धो पर चर्चा करना | जैसे : बाल विवाह, बालश्रम,मृत्यु भोज,आदि|
- ग्राम पंचायत स्तर पर, स्वराज समूह , गैर सरकारी संगठनों, आशा , आंगनवाडी कार्यकर्ता , ग्राम सेवक आदि से नियमित सम्पर्क बनाकर समुदाय का स्थाई विकास में सहयोग करना|
- राष्ट्रीय फ्लेगशिप कार्यक्रमों का प्रचार-प्रसार, प्रोत्साहन एवं सहभागिता बढ़ाने में सहयोग करना जैसे – प्रधानमंत्री जन धन योजना , स्वच्छ भारत मिशन , शौचालय निर्माण , मनरेगा ,आदर्श ग्राम योजनाओ के साथ ही अन्य योजनाओ में भागीदारी|
- सामाज में चल रही विभिन्न कुरूतियो पर अंकुश लगाने हेतु कार्य करना जैसे : शराब सेवन , अफीम , गांजा, आदि के विरुद्ध कार्य|

## मानगढ़

**सभी पाठकों को जयगुरू !!!**

**सच्चा स्वराजः**
साथियों,वर्तमान समय में हम इस बात को भलीभांति जानते है कि हमारे गाँवो से बड़ी संख्या में लोग पलायन कर दुसरे राज्यों में चले जा रहे है| कई युवा साथी खेती को बुजुर्गो के भरोसे छोड़कर पलायन कर जाते है जिससे युवा साथियों का खेती से लगाव कम हो गया है| पलायन के कारण लोग अपने अधिकारों से जैसे बच्चों की शिक्षा, परिवारजनों का स्वास्थ्य एवं पोषण, खाद्य सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा से वंचित रह जाते है, इन परिस्थितियों में प्रवास पर जाने वाले ग्रामीणों को पंचायत स्तर पर चिन्हित किया जाये और उनका रिकॉर्ड संधारण कर संचालित योजनाओं और सामाजिक सुरक्षा योजनाओ से लाभान्वित किया जा सके, प्रवासी श्रमिको के लिए निर्मित कानूनों का लाभ मिल सके| इस उद्देश्य से पंचायत स्तर पर प्रवासी श्रमिक पंजिका बनाई गई है|जिसमे सभी प्रवासी श्रमिको का पंजीयन किया जा रहा है|आप सभी पाठको से अनुरोध है कि वे अपनी-अपनी ग्राम पंचायत में पलायन पर जाने वाले श्रमिको तथा उनके परिवारों का पंजीयन कराये |
प्राचीन काल से चली आ रही हाट बाज़ार की परम्परा आदिवासी एवं ग्रामीण जनजीवन का अभिन्न अंग रही है| हाट आदिवासी समुदाय कि सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक पक्ष को मजबूत बनाये रखने और निरंतरता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है|आनंदपुरी, गांगड़तलाई और झालोद क्षेत्र में हाट को बढ़ावा देने, समुदाय के युवाओ को जोड़ने के उद्देश्य से जन-जागरूकता अभियान चलाया गया, जिसमे हाट बाज़ार से जुड़े गीत, रोचक प्रसंग पर आधारित नुक्कड़ नाटक के माध्यम से समुदाय को होने वाले लाभ के बारे में जागरूक किया गया |

**सच्ची खेतीः** जिला दाहोद विकासखंड झालोद में वाग्धारा संस्था द्वारा 48 किसानों को उन्नत कृषि यंत्रो का वितरण किया गया, साथ ही समेकित खेती प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए कृषक पाठशाला का आयोजन किया जा रहा है| इन पाठशालाओं में नई कृषि तकनीकों से किसानों को जागरूक किया जा रहा है| सहजकर्ताओं के द्वारा पोषण वाटिकाओं का नियमित फॉलोअप करके उन्हें इनपुट दिए जा रहे है| 239 सक्षम समूहों की बैठके आयोजित करके फसलो में रोग नियंत्रण हेतु निमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, जीवामृत, पौध वृद्धि टॉनिक आदि बनाये जा रहे है |

**सच्चा बचपनः** समाज में लड़कियों के प्रति फैली असमानताओं और अधिकारों के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से सहजकर्ताओं के द्वारा 99 विद्यालयों और छात्रावासों में राष्ट्रीय बालिका दिवस में सहभागिता की। 15वें राष्ट्रीय बालिका दिवस में आयोजित कार्यक्रम के माध्यम से बालिकाओं को प्रोत्साहन और अवसर देने, लैंगिक भेदभाव को दुर करने, बालिका शिक्षा को बढावा, बाल विवाह नही करने के उद्देश्य से कई प्रकार कि गतिविधियां आयोजित कर समाज को प्रेरित किया गया। इस माह 92 बाल पंचायतों का आयोजन कर बाल अधिकारों के लिए सभी बच्चों की पहुँच सुनिश्चित करने का प्रयास किया । विद्यालयों में विविध खेल एवं रचनात्मक गतिविधियों के साथ ही बच्चों की दृष्टि में बाल सुलभ पंचायत बनाने के लिए प्रयास किये । ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति की बैठकों में बाल सुलभ गाँव बनाने की कार्ययोजना का पुनर्मूल्यांकन किया गया ।

**वाहन चलाते समय हेलमेट उपयोग करने के साथ स्पीड कम रखे... क्योंकि परिवार आपकी प्रतिक्षा कर रहा है |**

# पलाश के पौधे का महत्व

पलाश (पलास,छूल,परसा, ढाक, टेसू, किंशुक, केसू) एक वृक्ष है जिनके फूल बहुत ही आकर्षक होते हैं। आकर्षक फूलों के कारण ही इसे "जंगल की आग" भी कहा जाता है। पलाश का फूल उत्तर प्रदेश और झारखण्ड का राज्य पुष्प है और इसको 'भारतीय डाकतार विभाग' द्वारा डाक टिकट पर प्रकाशित कर सम्मानित किया जा चुका है।

**पलाश क्या काम आता है** ?

**इसके पत्ते दोना और पत्तल बनाने के काम आते हैं। इसमें रोगाणु रोधी और एंटी ऑक्सिडेंट गुण पाए जाते हैं | जिसकी वजह से डायरिया, लिवर और अन्यं समस्याओं के इलाज के लिए प्रयोग किया जाता है।**

**पलाश क्या है** ?

यह फबासी परिवार का एक फूल है, जिसका वैज्ञानिक नाम ब्यूटिया मोनोस्पर्मा (Butea monosperma) है। यह भारत में आसानी से किसी भी स्थान पर मिल जाता है। पलाश के फूल के अलावा इसकी पत्तियां, छाल व बीज का उपयोग भी विभिन्न दवाइयों के रूप में किया जाता है। पलाश के औषधीय गुणों के कारण इससे बनी दवाइयों का इस्तेमाल त्रिदोष में वात और कफ का उपचार करने के लिए किया जाता है। इसके अलावा, पलाश में और भी कई गुण होते हैं, जिसके बारे में आगे विस्तार से बताया गया है : -

**पलाश के औषधीय गुण**

आयुर्वेद में पलाश पौधे के विभिन्न भागों का भिन्न-भिन्न औषधीय गुणों का उल्लेख मिलता है। पलाश से संबंधित एक शोध से जानकारी मिलती है कि इसकी जड़ में कृमिनाशक (आंत के कीड़ों को साफ करने वाला), एफ्रोडि सिएक (यौन इच्छा बढ़ाने वाला), एनाल्जेसिक (दर्द को कम करने वाला) जैसे गुण होते हैं। इसके अलावा, पलाश के बीजों में एंटीडायबिटिक प्रभाव पाया जाता है, जो मधुमेह की समस्या को कुछ हद तक नियंत्रित करने में सहायक हो सकता है ।

वहीं, पलाश की जड़ में ड्यूरेटिक यानी मूत्रवर्धक गुण मौजूद होता है। इसका यह प्रभाव शरीर के ऊतकों से अतिरिक्त पानी और नमक को यूरिन के रास्ते से बाहर निकाल सकता है। इसके अलावा, पलाश में सूजन को कम करने का प्रभाव भी देखा गया है। ऐसे में माना जा सकता है कि इसका प्रयोग सूजन संबंधित परेशानियों से राहत पाने के लिए भी उपयोगी हो सकता है |

**पलाश के फायदे**

जैसा कि हमने ऊपर भी बताया कि पलाश का पौधा विभिन्न औषधीय गुणों से भरपूर होता है । इन्हीं गुणों के आधार पर पलाश से शरीर को होने वाले फायदों से जुड़ी जानकारी दे रहे हैं। बस इस बात का ख्याल रखें कि यह किसी भी बीमारी का पूर्ण से इलाज नहीं है। यह आपको स्वस्थ रखने के साथ कुछ बीमारियों से बचाव में मदद कर सकता है। चलिए, जानते हैं पलाश के फायदों के बारे में

**1. मधुमेह के लिए**

पलाश के फायदे में सबसे पहला नंबर डायबिटीज का आता है। दरअसल, पलाश के इथेनॉल अर्क में एंटीहाइपरग्लिसेमिक गुण होते हैं, जो मधुमेह को नियंत्रित करने में मदद कर सकते हैं। लैब में चूहों पर किए गए शोध के आधार पर बताया जाता है कि दो हफ्ते तक 200 मिलीग्राम पलाश का उपयोग करने से ब्लड शुगर और सीरम कोलेस्ट्रोल नियंत्रित किया जा सकता है। साथ ही अच्छे कोलेस्ट्रोल को बेहतर करने में मदद मिल सकती है। यह शोध एनसीबीआई (नेशनल सेंटर फॉर बायोटेक्नॉलोजी इंफॉर्मेशन) की साइट पर उपलब्ध है |

**2. सूजन में पलाश के फूल के फायदे**

अगर शरीर में किसी भी कारण से सूजन आ जाए, तो उससे आराम पाने के लिए पलाश के फायदे देखे जा सकते हैं। एनसीबीआई की ओर से प्रकाशित एक शोध में यह पाया गया है कि पलाश के फूल में मेथनॉलिक अर्क होता है। इस अर्क में एंटीइंफ्लेमेटरी गुण पाए जाते हैं। ये घाव के कारण होने वाली सूजन को कम करने में सहायक हो सकते हैं | वहीं, इसमें मौजूद ब्यूट्रिन, आइसो ब्यूट्रिन और आइसोकोरोप्सिन नामक तत्व भी सूजन को कम करने में मदद कर सकते हैं |

**3. पेट दर्द में राहत**

पलाश के फायदे में पेट दर्द से निजात पाना भी शामिल है। एक शोध में साफ तौर से इस बात का जिक्र मिलता है कि पलाश के बीज का उपयोग पेट से जुड़ी समस्याओं से राहत दिलाने में मदद कर सकता है। वहीं, पेट से जुड़े विकारों में राहत दिलाने के साथ पलाश के बीज पेट के कीड़े का उपचार करने में भी सहायक हो सकते हैं |फिलहाल, इसकी कार्यप्रणाली पर अभी और विस्तृत रूप से शोध की आवश्यकता है।

**4. बुखार में पलाश के फायदे**

जब शरीर का तापमान सामान्य से अधिक होता है, तो उसे बुखार कहा जाता है। साथ ही शरीर में किसी तरह के वायरस या बैक्टीरिया के कारण संक्रमण हो जाता है, तो भी बुखार हो सकता है | बुखार से आराम पाने में भी पलाश के फूल के फायदे देखे जा सकते हैं। एक शोध में इस बात का जिक्र मिलता है कि पलाश के फूल कई अन्य शारीरिक समस्याओं के साथ-साथ क्रोनिक बुखार से आराम पाने में भी सहायक हो सकते हैं | हालांकि, इसके पीछे पलाश का कौन-सा गुण काम करता है, इसे लेकर अभी और शोध की आवश्यकता है ।

**5. रक्त साफ करने में सहायक**

रक्त में गंदगी के कारण मुंहासे, रैशेज, एलर्जी आदि परेशानी हो सकती हैं। वहीं, रक्त को साफ करने के लिए किसी दवा की जगह हर्बल चीजों का इस्तेमाल करना सही रहता है | ऐसी ही एक हर्बल औषधि है पलाश की छाल। पलाश की छाल ब्लड प्यूरिफायर की तरह काम करती है और खून साफ कर, कई स्वास्थ्य संबंधित परेशानियों से बचाव में मदद कर सकती है | इस तरह पलाश ब्लड को प्यूरिफाई करने में उपयोगी साबित हो सकता है ।

**6. कुष्ठ रोग में लाभदायक**

कुष्ठ रोग यानी लेप्रोसी के इलाज के लिए भी पलाश फूल के फायदे देखे जा सकते हैं। यह रोग एक तरह के संक्रमण, माइकोबैक्टेरियम लेप्री नामक बैक्टीरिया से होता है। इस रोग में नसों, मांसपेशियों और त्वचा पर प्रभाव पड़ सकता है | इसके उपचार में पलाश के फूल कुछ हद तक मददगार हो सकते हैं। आयुर्वेद की माने तों पलाश के फूल में एंटीलेप्रोटिक प्रभाव होता है, जो कुष्ठ रोग से निजात दिलाने में मददगार हो सकता है |

**7. पाइल्स में लाभकारी**

मलद्वार या मलाशय के आसपास की नसों में होने वाली सूजन को पाइल्स कहा जाता है | एनसीबीआई पर प्रकाशित शोध की मानें, तो पलाश के सूखे हुए फूल के पाउडर में कई जरूरी खनिज तत्व पाए जाते हैं जिनमें से एक है मैंगनीज। यह बवासीर के इलाज में कुछ हद तक सहायक हो सकता है । इसलिए, पाइल्स से राहत पाने के लिए भी पलाश के फायदे देखे जा सकते हैं।

**8. घेंघा यानी गॉइटर में फायदेमंद**

घेंघा या गॉइटर ऐसी बीमारी है, जिसमें थायराइड ग्लैंड बढ़ जाता है और सूजन आ जाती है | इस समस्या से आराम पाने के लिए पलाश के फायदे उठाए जा सकते हैं। शोध की मानें तो पलाश की छाल का जूस घेंघा का उपचार करने में मदद कर सकता है | वहीं, इसमें थायराइड हार्मोन को नियंत्रित करने का गुण भी होता है | अभी इस संबंध में वैज्ञानिक और अध्ययन कर रहे हैं ।

**9. दाद में पलाश का उपयोग**

दाद एक तरह का संक्रमण होता है, जो फंगस के कारण होता है । इसके लिए पलाश का उपयोग करना फायदेमंद हो सकता है। एक शोध में बताया गया है कि पलाश के पेड़ से निकलने वाला रस यानी पलाश का गोंद दाद के प्रभाव को कम कर सकता है । इसके साथ ही पलाश की छाल में एंटीफंगल गुण भी पाया जाता है, जो संक्रमण फैलाने वाले फंगस को खत्म करने में सहायक हो सकता है । इस तरह से माना जा सकता है कि पलाश के गोंद के फायदे दाद में लाभकारी हो सकते हैं।

**10. यौन शक्ति बढ़ाए**

यौन शक्ति बढ़ाने में भी पलाश का इस्तेमाल लाभकारी हो सकता है। दरअसल, पलाश के अर्क में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट गुण ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस को कम करके इस समस्या से आराम दिला सकता है। साथ ही यह नाइट्रिक ऑक्साइड और एंड्रोजन के स्तर को भी बढ़ाता है, जिससे पुरुषों में यौन की समस्या से आराम मिल सकता है । ऐसे में यह कहा जा सकता है कि पलाश के फूल के फायदे यौन शक्ति और उससे जुड़ी अन्य समस्याओं में लाभकारी हो सकते हैं।

**11. सर्दी-खांसी में राहत**

पलाश के फायदे सर्दी खांसी से राहत पाने के लिए भी देखे जा सकते हैं। एक शोध में साफतौर से यह बताया गया है कि पलाश की छाल का काढ़ा सर्दी में खांसी से निजात दिलाने में मददगार हो सकता है | वहीं, एक अन्य शोध में इस बात का जिक्र मिलता है कि पलाश की पत्तियों को भिगोकर उसका पानी पीने से कोल्ड और कफ से राहत मिल सकती है | ऐसे में सर्दी-खांसी की परेशानी में पलाश के पत्ते के फायदे देखे जा सकते हैं।

**12. त्वचा के लिए फायदेमंद**

त्वचा संबंधित परेशानियों के लिए पलाश के संपूर्ण हिस्सों का विभिन्न तरीको से उपयोग किया जा सकता है। दरअसल, एक शोध में बताया गया है कि पलाश के फूलों का उपयोग त्वचा से जुड़ी समस्याओं को ठीक कर सकता है । वहीं, एक अन्य शोध में इस बात का जिक्र है कि पलाश के पत्तों के अर्क से तैयार क्रीम त्वचा को सूर्य की हानिकारक किरणों से सुरक्षा प्रदान करने में सहायक हो सकती है । इस आधार पर त्वचा के लिए भी पलाश के फायदे हासिल किए जा सकते हैं।

**13. बालों के लिए फायदेमंद**

बालों के लिए भी पलाश के फायदे देखे जा सकते हैं। एक शोध के अनुसार, पलाश के फूल में एंटीऑक्सीडेंट गुण मौजूद होता है, जो बालों के रोम में मौजूद मुक्त कणों को दूर करने के साथ बालों को झड़ने से रोक सकता है । इसके अलावा, यह बालों के एनाजेन अवस्था को सक्रिय रखने के साथ टेलोजन फेज को घटा सकता है, जिससे बाल गिरने की समस्या काफी हद तक कम हो सकती है । बता दें, कि एनाजेन चरण में बाल रोम से बढ़ना शुरू होते हैं और टेलोजन में बाल झड़ते हैं। ऐसे में पलाश के फूलों का इस्तेमाल बालों के लिए लाभकारी माना जा सकता है।

**आगे पढ़ें**

**लेख के अगले भाग में आप जानेंगे कि पलाश का उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है।**

**पलाश का उपयोग –**

नीचे बताए गए विभिन्न तरीकों से पलाश का उपयोग किया जा सकता है।

- पलाश के फूलों को सुखाकर, उसका पाउडर बनाकर सेवन किया जा सकता है।
- पलाश के कुछ फूलों को रातभर भिगोकर अगली सुबह उस पानी का सेवन कर सकते हैं।
- पलाश बीजों को सरसों के तेल में गरम करके, इस तेल से मालिश कि जा सकती है।
- पलाश के सप्लीमेंट्स दवा के तौर पर लिए जा सकते हैं।
- बाजार में पलाश की पत्तियों का जूस, इसकी छाल, फूल एवं बीज का पाउडर और एसेंशियल ऑयल उपलब्ध होता है।

**अंत तक पढ़ें लेख**

**लेख के इस भाग में पलाश का उपयोग करते समय बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में जानेंगे ।**

**पलाश लेने से पहले सावधानियां**

पलाश का उपयोग करते समय नीचे दी गई बातों का ध्यान रखें।

- गर्भवती और स्तनपान करवाने वाली महिलाएं इसका सेवन करने से पहले डॉक्टर से सलाह लें।
- अगर किसी बीमारी के लिए एलोपेथिक दवा का सेवन कर रहे हैं, तो पलाश का उपयोग करने से पहले डॉक्टर से सलाह जरूर लें।
- पलाश के फूल का उपयोग करने से पहले उसे गर्म पानी से अच्छी तरह धो लें, ताकि उसकी सारी गंदगी निकल जाए। आगे जानिए इसकी खुराक से जुड़ी कुछ जानकारी।

**पलाश की खुराक**

यह इस बात पर निर्भर करता है कि पलाश का उपयोग किस लिए किया जा रहा है। साथ ही पलाश की खुराक व्यक्ति की उम्र, स्वास्थ्य और अन्य कई कारकों पर निर्भर करती है। अगर इसका सेवन किसी खास बीमारी या पोषक तत्व के लिए किया जा रहा है, तो उपयोग से पहले इसकी उचित खुराक के बारे में आहार विशेषज्ञ से सलाह लेना उचित रहेगा ।

**अंत में पढ़ें**

**पलाश के नुकसान –**

आमतौर पर पलाश का उपयोग कई मामलों में फायदेमंद है, लेकिन कुछ मामलों में इसका इस्तेमाल नुकसान का कारण बन सकता है। इसलिए, यहां हम पलाश के नुकसान के बारे में बता रहे हैं, जो कुछ इस प्रकार हैं:

- पलाश के बीजों में गर्भ निरोधक गुण होता है, जो गर्भ धारण करने में समस्या उत्पन्न कर सकता है ।
- पलाश में शुक्राणु के प्रभाव को कम करने के गुण होते हैं, ऐसे में पुरुषों को इसके इस्तेमाल से पहले डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए ।
- संवेदनशील लोगों को पलाश के सेवन से एलर्जी की शिकायत हो सकती है।

लेख को पढ़ने के बाद आप समझ गए होंगे कि होली का रंग बनाने के अलावा पलाश के फूल के फायदे अन्य भी हैं। पलाश के फूल, जड़ और इसके अन्य भागों का उपयोग आप कई शारीरिक समस्याओं से लाभ उठा सकते हैं। पलाश के फायदे के साथ याद रखिए कि हर सिक्के के दो पहलु होते हैं। पलाश के नुकसान पर भले ही ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है, लेकिन अपनी सुरक्षा को मद्देनजर रखते हुए इसका उपयोग सावधानी से करना ही उचित होगा। हम आशा करते हैं कि पलाश का उपयोग करने की जानकारी पर लिखा हमारा यह लेख आपको पसंद आया होगा।

## अक्सर पूछे जाने वाले सवाल

**क्या पलाश दस्त की समस्या में मददगार हो सकता है?**
हां, पलाश की छाल में एंटी-डायरियल गुण मौजूद होता है, जो दस्त की समस्या से राहत प्रदान कर सकता है ।

**क्या पेट के कीड़ों के लिए पलाश का इस्तेमाल किया जा सकता है?**
हां बिल्कुल, पलाश की जड़ की छाल में कृमिनाशक गुण मौजूद होता है, जो आंतों से कीड़ों को साफ करने में सहायक हो सकता है ।

**क्या त्वचा संबंधित परेशानियों के लिए पलाश का उपयोग किया जा सकता है?**
जी हां, त्वचा संबंधित परेशानियों के लिए पलाश फूल का इस्तेमाल उपयोगी हो सकता है ।

**मोतियाबिंद से बचाव में पलाश कैसे फायदेमंद हो सकता है ?**
एक शोध में इस बात का जिक्र मिलता है कि पलाश की जड़ के अर्क को आंखों में डालने से मोतियाबिंद की समस्या से राहत मिल सकती है । ऐसे में मोतियाबिंद से बचाव के लिए पलाश को उपयोगी माना जा सकता है।

**क्या सफेद पलाश का पेड़ सेहत के लिए फायदेमंद है?**
पलाश के गुण सफेद पलाश के पेड़ में भी पाए जाते हैं। ऐसे में माना जा सकता है कि सफेद पलाश का पेड़ भी कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान कर सकता है।

## मेहनत कर, पलायन रोका

नामः- रंगलाल
उम्र :- 35 वर्ष
पत्नी का नाम :- केसर देवी
गांव का नाम :- घठियन
जनजातिय स्वराज सगंठन का नाम :- अमर सिंह का गढ़ा
ब्लॉक :- घाटोल

जिला कार्यालय बांसवाडा से 50 किलोमीटर कि दुरी पर स्थित ग्राम घठियन जो चारो ओर पहाड़ों से घिरा हुआ है। यहां कि जमीन बंजर है| पानी कि कमी के चलते लोग आर्थिक स्थिति से काफी कमजोर है। साथ ही इस गांव के अधिकतर लोग पलायन पर गुजरात चले जाते हैं। मजदूरी करके अपने बच्चों का लालन-पालन करते हैं। समस्त गाँव वासियों के लिए एक बड़ी चुनौती थी, क्योंकि यहां पर सिंचाई के लिए पानी कि अनुपलब्धता के कारण फसल उगाना संभव नही था| इसको देखते हुए अधिकतर परिवार पलायन करने को मजबुर हो गये थे। इस दौरान हम बात करते है गांव में रहने वाले रंगलाल और उनकी पत्नी केसर देवी की, रंगलाल अपने बच्चों और पत्नी के साथ गुजरात पलायन पर रहता था| मजदूरी कर परिवार का पालन-पोषण करता रहा। रंगलाल का गांव से दूर -दूर तक का नाता टूट चुका था। इस दौरान बच्चे शिक्षा से कोसो दूर हो गये| इस दौरान एक बार केसर देवी का अपने गांव में आना हुआ। यहां उसने देखा कि वाग्धारा संस्था द्वारा गठित सक्षम समूह की मीटिंग चल रही थी। वह मीटिंग की सभी बातें ध्यान से सुन रही थी जो कि खेती-बाड़ी के साथ ही अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को कैसे मजबूत किया जाए इन मुद्दों पर संस्थान के सदस्य बातचीत कर रहे थे। केसर देवी ने सारी बाते अपने परिवार के साथ चर्चा की एवं निर्णय लिया कि गाँव में ही रहकर ही जीवन यापन करेंगे|

रंगलाल अपना परिवार लेकर फिर से गाँव में रहना शुरू किया, पहले मजदूरी और खेती दोनों से शुरुवात करी उसके बाद धीरे-धीरे खेती को बढ़ावा दिया। संस्था का सहयोग भी मुख्य रहा जिसमे संस्था द्वारा अलग-अलग प्रकार के बीज समय अनुसार उपलब्ध करवाए गए साथ ही कैसे उगाना है किस तरह देखभाल करनी है| इन मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की, रंगलाल ने अपने खेत में सब्जियां लगाना शुरू किया तो पाया की सब्जियां काफी बेहतर तरीके से उगने लगी। यह देखकर खुश था कि इन सब से कुछ तो आमदनी बढेगी। सब्जियों के पौधों पर सब्जियां लगने लगी तो केसर देवी का उत्साह और बढ़ गया। रंगलाल ने अपने खेत में बैंगन, टमाटर, मिर्च, भिंडी, बलोल और गाजर, मूली लगाई। साथ ही मौसमी सब्जियाँ जैसे आलू, प्याज, लहसुन भी लगाए, जिसका उत्पादन अच्छा हुआ और बाज़ार में कीमत भी अच्छी मिली| इन सब से 80000 की कमाई हुई जिसे रंगलाल ने पहले घर की मरमत का कार्य पूरा किया और बच्चो का विद्यालय में नामाकन करवाया| रंगलाल ने इसके बाद भी मेहनत करना नहीं छोड़ा और खेती में नए-नए तरीको को अपना कर अपने परिवार कि आर्थिक स्तिथि को मजबूत किया| रंगलाल ने हल्दी और अदरक कि भी खेती काफी अच्छे से की, जिसे रंगलाल को 65000 की आमदनी हुई जिसे रंग लाल ने कुछ बकरिया और गाय खरीदी जिसे खाद का उपयोग भी होने लगा| धीरे -धीरे पैसों की बचत से रंग लाल और केसर देवी ने जमीन खरीदने और उसमें सब्जियां करने का निर्णय लिया। अपने खेत के पास ही एक खेत खरीदा और उसमें भी सब्जियां उगाने लगे। पूरा परिवार एक नई दिशा की ओर बढ़ने लगा। जहां केसर देवी के बच्चे उनके साथ पलायन पर गुजरात रहते थे, पढ़ाई लिखाई से नाता टूट चुका था, अब बच्चों को स्कूल भेजने लगी है। रंगलाल और केसर देवी कहती है वाग्धारा संस्थान ने हमें एक नई राह दिखाई है। इस राह पर चलकर आज हम इस मुकाम पर पहुचे है इसके लिए संस्था का आभार व्यक्त करते है। केसर देवी और रंगलाल दोनों गांव के लिए एक मिसाल बन गए। केसर देवी नियमित सक्षम समूह की बैठक में भाग लेती है। सभी महिलाओं एवं गांव के लोगों को सब्जियां एवं खेती-बाड़ी के लिए जागरूक करती है। केसर देवी कहती है कि अपने गांव में रहकर भी एक सही राह मिले तो पलायन पर जाने की जरूरत नहीं होगी। इससे गांव के सभी लोग प्रभावित हैं| गांव में वातावरण बनने लगा है लोगों का खेती-बाड़ी और सब्जियों से एक अनूठा लगाव हो गया है। आज रंग लाल और केसर देवी की बातें गांव में चारों ओर होती है साथ ही ग्राम पंचायत के वार्ड पंच, सरपंच भी काफी तारीफ करते हैं। साथ ही रंग लाल अपने आस-पास के गाँव के लोगो को भी खेती के लिए जागरूक करता है |

वागड़ रेडियो 90.8 FM
वाग्धारा, कुपड़ा
SCAN ME
अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-
वागड रेडियों 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वाग्धारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001
फोन नम्बर है - 9460051234 ई-मेल आईडी -radio@vaagdhara.org
यह "वातें वाग्धारा नी" केवल आंतरिक प्रसारण है ।

मार्गदर्शक : दीपक शर्मा, गगन सेठी, नरेन्द्र कुमार । मुख्य संकलक : परमेश पाटीदार । संकलक सहयोगकर्ता : जागृती भट्ट ।